महाविद्यालय, देगलूर

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2021, Issue-78, Vol-01

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) स्त्री—पुरुष समानता के प्रेरणास्रोत हैं संत बसवेश्वर
स्मिता मुरलीधर भगत, वर्धा ||115

28) एडुसैट — शिक्षा का कृत्रिम उपग्रह
डॉ. विभा दुबे & डॉ. मनीष कुमार दुबे, कानपुर ||117

29) वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे हिंदी का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप
डॉ. पुनीता कुशवाहा, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड ||120

30) अमेरिका के चुनावी व्यवस्था का विश्लेषण (एक राष्ट्र एक चुनाव के सन्दर्भ में)
प्रा.डॉ.लक्षटे रत्नाकर बाबुराव, जिला.नांदेड (महाराष्ट्र) ||124

31) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य एवं गृह वातावरण ...
मयंक लिमये, सीहोर., मध्यप्रदेश ||128

32) माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्र—छात्राओं की ...
मोहिनी सोनवाल & डॉ. रमा त्यागी, ग्वालियर (म.प्र.) ||130

33) हिन्दू—संस्कृति के मौलिक लक्षण
डॉ.अमित कुमार पाण्डेय ||134

34) उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं मूल्यों ...
नेहा परिहार, सीहोर., मध्यप्रदेश ||136

35) **जनवादी साहित्यकार शैलेष मटियानी**
डॉ० विवेकानन्द पाठक, रूद्रपुर (उधम सिंह नगर) ||139

36) शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि ...
रघुराज सिंह गुर्जर & डॉ. सुनीता भदौरिया, ग्वालियर (म.प्र.) ||143

37) आरक्षित एवं अनारक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक ...
श्रीमती क्षमा रस्तौगी, मेरठ ||147

38) मेवाड़ का द्वितीय जौहर—साका एवं बलिदानी रावत नरबद
डॉ.हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत & श्रीमती वर्षा चुण्डावत, राजसमन्द (राजस्थान) ||149

39) नारी—त्रासदी की परिसीमा के रूप में 'आना इस देश'— एक विवेचन
डॉ. बबन शंकर सातपुते, मिरज (महाराष्ट्र) ||153

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर जि. नांदेड

30

अमेरिका के चुनावी व्यवस्था का विश्लेषण
(एक राष्ट्र एक चुनाव के सन्दर्भ में)

प्रा.डॉ.लक्षटे रत्नाकर बाबुराव
परियोजना निदेशक,
भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली
भारतीय कारगर नीति सामाजिक अनुसंधान,
सहयोगी प्राध्यापक तथा अनुसंधान मार्गदर्शक,
स्नातक तथा स्नातोकत्तर राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष,
देगलूर महाविद्यालय देगलूर, ता.देगलूर, जिला.नांदेड
(महाराष्ट्र)

****

सारांश : इस शोध लेख में शोध लेख के ध्येय, शोध लेख का महत्व, एक राष्ट्र एक चुनाव क्या है ?, अमेरिकन संघ व्यवस्था कि विशेषताएं, अमेरिका के चुनाव, अमेरिका में गव्हर्नर्स के पुनर्चुनाव के सफलता का प्रमाण, अमेरिका चुनाव के तंत्र जिसमें किसप्रकार अमरिका सरकार ने वहां के सभी चुनावों को एक साथ करानें का सफल प्रयास किया है । इसका विश्लेषण किया है । जिससे यह ज्ञात होता है कि अमरिका ने अपने देश में एक राष्ट्र एक चुनाव की व्यवस्था का स्वीकार किया है । जिससे भारत को भी अपने यहां एक राष्ट्र एक चुनाव कि प्रक्रिया को लागू कराने के लिए आवश्यक सिख मिलती है ।

कीवर्ड : अमरिका,संघराज्य, चुनाव ,लोकतान्त्रिक, भारत,तंत्र,संविधान,लोकसभा,विधानसभा,राष्ट्राध्यक्ष, हाऊस ऑफ रिप्रझेंटटीव्ह, सिनेट, गव्हर्नर्स, राज्य,एक राष्ट्र एक चुनाव

१) प्रस्तावना (Introduction) :

किसीभी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में चुनाव एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है । चुनाव हि राष्ट्र के विकास कि गती को तेज बनाते है । इसलिए सभी लोकतान्त्रिक देशों ने स्वतन्त्र चुनाव पद्धती को अपनाया है । भारत ने संविधान के धारा ३२४ से ३२७ में स्वतन्त्र और स्वायत्त केंद्रीय चुनाव आयोग का गठन किया है । ७३ वें संविधान संशोधन ने राज्यों के लिए अलग से चुनाव आयोग का निर्माण किया है । चुनाव देश में सभी के राजनीतिक सहभागीता को बढाते है । सरकार के कामों को गिनाने का काम जनता चुनाव में करती है । लोकतान्त्रिक देशों में चुनाव उत्सव का माहौल होता है । चुनाव हि सरकार और राजनीतिक दल को अधिक क्रियाशील बनाते है । चुनाव यह एक बहुत हि विशाल,लचीली और जटील प्रक्रिया है । हर देश अपने अपने चुनाव प्रक्रिया में सुधार से उसे सक्षम और प्रभावशाली बनाने का प्रयास करते है । चुनावी गतिविधियां और प्रक्रिया से सबको रूबरू कराने हेतू चुनाव आयोग कि ओर से जागरण के कार्यक्रम भी चलाए जाते है । सभी देशों के जनसंचार माध्यम इसमें बढ चढ कर हिस्सा लेते है ।

भारत में चुनाव व्यवस्था में सुधार करणे हेतू अनेक विषयों पर चर्चा सदा से हि होती है । लेकीन वर्तमान में एक राष्ट्र एक चुनाव इस विषय पर राजनीतिक माहौल बडा हि गर्म है । अमेरिका ने अपने यहां पिछ्ले अनेक सालों से एक राष्ट्र एक चुनाव कि प्रक्रिया को अपनाया है । भारत और अमेरिका दोनो संघराज्य है । जिसमें मूलत: अधिक अन्तर भी है । अमेरिका ने संघराज्य होकर भी इस व्यवस्था का किसप्रकार क्रियान्वयन किया है ? भारत में इसका क्रियान्वयन करने हेतू अमेरिका कि व्यवस्था मार्गदर्शक है क्या ? यह सोचना या इसपर विचार करना हमारी दृष्टी से अधिक आवश्यक है ।

२) शोध लेख का आधार — प्रेरणा (Base or Inspiration of this Research Article) :

भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली के भारतीय कारगर नीति सामाजिक अनुसंधान के तहत मान्यता प्राप्त बृहद अनुसंधान प्रकल्प विषय एक राष्ट्र एक चुनाव की सामाजिक –आर्थिक एवं राजनीतिक उपलब्धिया एवं चुनौतियों का अध्ययन के कारण मुझे एक राष्ट्र एक चुनाव इस विषय पर अनुसंधान करने का अवसर प्राप्त हुआ है । प्रस्तावित शोध लेख इस अनुसंधान कार्य का हि एक अंश और

इससे प्राप्त प्रेरणा है ।

३) शोध लेख के ध्येय **(Objectives of Research Article)** :

प्रस्तावित शोध लेख में निम्न ध्येय को स्पष्ट करने का प्रयास होगा ।

१) अमेरिका कि चुनाव व्यवस्था को समझना।

२) अमेरिका के संघ व्यवस्था कि विशेषता को स्पष्ट करना।

३) अमेरिका में कितने प्रकार के चुनाव होते है इसका जायजा लेना।

४) एक राष्ट्र एक चुनाव कि संकल्पना स्पष्ट करना ।

५) अमेरिका ने किसप्रकार अपने देश में एक राष्ट्र एक चुनाव कि व्यवस्था को क्रियान्वित किया।

६) इसके हेतू उन्होंने कौनसे तंत्र को अपनाया आदि का विश्लेषण इस लेख में किया है ।

४) शोध लेख का महत्व (Importance of Research Article):

इस शोध लेख से हमे निम्न प्रकार कि जानकारी मिलेगी । जिसका इस्तमाल हम भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव कि प्रक्रिया कि क्रियान्वित करने हेतू कर सकते है ।

१) भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव के क्या पर्याय हो सकते है ? इसे समझने कि दृष्टी से इस शोध लेख कि उपयुक्तता है ।

२) अमेरिका ने संघीय व्यवस्था को अपनाकर भी किस प्रकार एक राष्ट्र एक चुनाव कि व्यवस्था को अपनाया यह हमे इस शोध लेख से ज्ञात होगा ।

३) अमेरिका के उसी तंत्र को हमारे देश में क्रियान्वित करणे के प्रति हमारी सोच को यह शोध लेख विकसित करता है ।

५) शोध लेख की अनुसन्धान पद्धति :

इस शोध लेख के लिए ग्रंथालयीन और विश्लेषणात्मक अनुसन्धान पद्धति का आधार लिया है।

६) एक राष्ट्र एक चुनाव क्या है ? (What is ONOE)

एक राष्ट्र एक चुनाव यह वर्तमान भारतीय राजनीति का बहुत चर्चित विषय है । इस विषय को अनेक देशों ने अपने अपने हिसाब से अपनाया है। भारत में १९५२ से १९६७ तक लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ होते थे । अमेरिका, युनायटेड किंगडम,जर्मनी,कनाडा,दक्षिण अफ्रिका आदि देशोंने इसको अपनाया है । भारत में भी इसको लागू करने कि दृष्टी से बहस शुरू है । भारत में एक राष्ट्र एक चुनाव के अलग अलग रूप है । जिसमें लोकसभा और राज्य विधानसभा के चुनाव एक साथ कराना । लोकसभा चुनाव के दो साल बाद सभी राज्यों के विधानसभा के चुनाव कराना । लोकसभा,विधानसभा और स्थानीय निकाय इन सभी चुनावों को एक साथ कराना । यह सभी चुनाव एक साथ कराना आसान नही है इसलिये एक राज्य के सभी चुनाव एक साथ कराना आदि चुनाव कराना यह एक राष्ट्र एक चुनाव का भारत में प्रारूप हो सकता है।

७) अमेरिकन संघ व्यवस्था कि विशेषताएं (Features of American Federalism):

अमेरिका दुनिया का सबसे बडा विकसित राष्ट्र है । इन्होंने अध्यक्षीय लोकतन्त्र को अपनाया है । इसमें एक हि कार्यकारी प्रमुख होता है । राष्ट्राध्यक्ष हि कार्यकारी सत्ता का वास्तविक प्रमुख होता है । जिसका चुनाव आम जनता करती है। जिसका कार्यकाल निश्चित होता है । वह चार साल का है । सत्ता विभाजन इसकी प्रमुख विशेषता है। इसमें सभी मंत्रियों का चयन राष्ट्राध्यक्ष करते है । इसलिए वह वहां के संसद को जवाबदार न होकर राष्ट्राध्यक्ष को जवाबदार होते है। अमेरिका का संघराज्य विश्व का संघराज्य शासन पद्धती का पहला प्रयोग है। जिसका संविधान विश्व का पहला लिखित संविधान है । वह ताठर है । इसके मंत्रिमंडल में देश मे ज्ञानी,पंडित और विद्वत वर्ग के लोगों का समावेश होता है। इस देश में दल के अनुशासन को अधिक महत्व है। अमेरिकन शासन व्यवस्था में राष्ट्राध्यक्ष को सबसे अधिक अधिकार है । उस देश में इससे अधिक शक्तिशाली दुसरा कोई नही है। साथ हि विश्व में भी इससे अधिक शक्तिशाली राष्ट्राध्यक्ष लोकतान्त्रिक देश में दुसरा कोई नही है । इस सन्दर्भ में हेनरी लिखते है The President of the

USA exercises the largest amount of authority]ever wielded by any man in a Democracy. इसके साथ विश्व के राजनीति में भी यह पद अधिक सत्ता और प्रभावशाली है ।

८) अमेरिका के चुनाव (American Elections):

अमेरिका कि चुनाव व्यवस्था का एक राष्ट्र एक चुनाव के सन्दर्भ में विश्लेषण करणे से पूर्व पहले इस देश में कितने प्रकार के चुनाव होते है यह जान लेना जरुरी है । अमेरिका में चार स्तर पर चुनाव होते है । केन्द्र,राज्य,लोकल और अन्य आदि । केन्द्र स्तर पर होनेवाले चुनाव में राष्ट्राध्यक्ष,उप राष्ट्राध्यक्ष, हाऊस ऑफ रिप्रेझेंटेटीव्ह और सिनेट इनका समावेश होता है । राज्यों के चुनाव में गव्हर्नर और उनके हाउस ऑफ रिप्रेझेंटेटीव्ह और सिनेट इन दो सदनों के प्रतिनिधी के चुनाव होते है । लोकल स्तर पर वहां के म्यूनसिपालिटी के चुनाव होते है। अन्य में वहां होनेवाले जनमत संग्रह है । जिसे अंग्रेजी में त्मममितमदकनउ कहते है ।

केन्द्र स्तर पर होनेवाले चुनाव में राष्ट्राध्यक्ष, उप राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव हर चार साल बाद एक साथ हि होते है । हालहि में २०२० में वहा ज्यो बायडन को राष्ट्राध्यक्ष और कमला हैरीस को उप राष्ट्राध्यक्ष के रूप में चुना गया। समकालीन में वहां उप राष्ट्राध्यक्ष पद का भी महत्व बढ गया है । इन चुनावो में जनता मतदान करती है । हाऊस ऑफ रिप्रेझेंटेटीव्ह के चुनाव हर दो साल के बाद होते है । इन चुनावों में भी जनता हि मतदान करती है । सिनेट के चुनाव हर छह साल के बाद होते है ।

अमेरिका में कुल ५० राज्य है । जिनका संविधान मुल संविधान से स्वतन्त्र एवं अलग है । लेकीन इन्होनें अपनी चुनाव प्रक्रिया को केंद्रीय चुनाव प्रक्रिया के साथ जोड लिया है । जिसमें ५० राज्यों के ५० गव्हर्नर का चुनाव होता है । हर राज्यों में हाऊस ऑफ रिप्रेझेंटेटीव्ह और सिनेट यह दो सदन है सिर्फ नेब्रास राज्य को छोडकर । क्योंकि नेब्रास राज्य में सिर्फ एक हि सदन है। इस तरह ९९ सदनों के चुनाव होते है ।

अमेरिका मे गव्हर्नर्स के पुनर्चुनाव के सफलता का प्रमाण	
1960 का दशक	64 %
1970 का दशक	69 %
1980 का दशक	74 %
1990 का दशक	81 %
2000 का दशक	80 %
2010 का दशक	88 %

(स्त्रोत—कौल लोकमताचा भारतीय निवडणुकांची उकल —प्रणय रॉय,दोराब आर.सोपरीवाला —अनुवाद —सतीश कामत—मनोविकास प्रकाशन —२०१९—पेज नं—२०)

उपरी सारणी से यह ज्ञात होता है कि पिछले अनेक दशकों से अमेरिका में राज्यों के गव्हर्नर्स के चुनावों में उसी व्यक्ति का दोबारा उस पद पर चुनाव कर चुनाव प्रकिया को टाला गया ।

लोकल स्तर पर वहां के म्यूनसिपालिटी के चुनाव होते है । अन्य में वहां होनेवाले जनमत संग्रह जिसे अंग्रेजी में Referendum कहते है । उपरी प्रकार के चुनाव अमेरिका जैसे दुनिया के सबसे बडे विकसित राष्ट्र में होते है ।

९) अमेरिका चुनाव के तंत्र (Techniques of American Election):

उपरी सभी चुनावों को कराने हेतू अमेरिका ने कौनसे तंत्र का इस्तमाल किया है यह जान लेना भी जरुरी है । अमेरिका के संविधान और चुनाव से सम्बन्धित कानून में चुनाव दिवस का प्रावधान है। चुनाव दिवस माने हर साल के नवम्बर माह के पहले सोमवार के बाद आनेवाले मंगलवार को वहां चुनाव याने मतदान होता है । इसका मतलब वहां चुनाव हर साल के ०२ से ०८ नवम्बर के बीच हि होते है । सम संख्यावाले वर्ष में यह चुनाव होते है । जिस संख्या को ४ से भाग जाता है उस वर्ष राष्ट्राध्यक्ष और उप राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव होते है। यह प्रथा पिछले कई सालों से वहां शुरू है ।

संघ/केन्द्र के चुनाव	कार्यकाल	मतदाता	2020	2022	2024
राष्ट्राध्यक्ष	04 साल	आम जनता	राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव हुये	यह चुनाव नही होगे	यह चुनाव होगे
उप राष्ट्राध्यक्ष	04 साल	आम जनता	उप राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव हुये	यह चुनाव नही होगे	यह चुनाव होगे
हाउस ऑफ रिप्रझेंटेटीव्ह (435 सदस्य)	04 साल	आम जनता	हर दो साल के बाद चुनाव	हर दो साल के बाद चुनाव	हर दो साल के बाद चुनाव
सिनेट (100 सदस्य)	06 साल	आम जनता	1/3 सदस्यों का चुनाव होगा	1/3 सदस्यों का चुनाव होगा	1/3 सदस्यो का चुनाव होगा
गव्हर्नर	11		11	39	11
हाउस ऑफ रिप्रझेंटेटीव्ह + सिनेट		आम जनता	88	11	88
जनमत संग्रह	जनमत संग्रह इन्हीं दिनों को होता है ।				

उपरी सारणी से यह ज्ञात होता है कि अमेरिका में होनेवाले चुनाव वह कौनसे भी हो हर दो साल के बाद होते है । इसका मतलब अमेरिका का मतदाता हर दो साल के बाद अपने घर से बाहर निकलकर मतदान करता है । वो यह मतदान केन्द्र या राज्य के लिए करता है । किस कारणवश अमेरिका में राष्ट्राध्यक्ष ने अपने पद का इस्तीफा दिया हो या पद पर असीन रहते हुए राष्ट्राध्यक्ष का निधन हुआ हो तो ऐसे समय में वहा राष्ट्राध्यक्ष के पद के लिए दुबारा चुनाव नहीं होते । उप राष्ट्राध्यक्ष हि पूर्णकालिक रूप से राष्ट्राध्यक्ष बनते है। हाऊस ऑफ रिप्रझेंटेटीव्ह के सदस्य का चुनाव हर दो साल के बाद होते है । इसके साथ हि सिनेट के १/३ सदस्य चुने जाते है । राज्यों के गव्हर्नर और हाउस ऑफ रिप्रझेंटेटीव्ह—सिनेट के चुनाव भी हर दो साल के बाद होते है । स्थानिय चुनाव भी इन्ही चुनाव के साथ होते है । बचे हुए समय में वहां चुनाव राजनीति और रंजिश से उपर उठकर विकास और जनकल्याण के नीति को बनाने में और उसे क्रियान्वित करणे के लिए सभी मिलकर राष्ट्राध्यक्ष, व्हाईट हाऊस को साथ देते है। अमेरिका में सभी चुनाव एक साथ ०२, ०४ या ०६ साल के अंतराल से होते है । वहां दो साल के बीच में कौनसे भी चुनाव नही होते ।

१०) निष्कर्ष (Conclusion):

अमेरिका ने पिछले अनेक सालों से सभी प्रकार के चुनाव के लिए यही पद्धति और तंत्र को अपनाया है । संघीय शासन व्यवस्था के रहते वहां यह पद्धति ठीक ढंग से काम कर रही है । वहां के जनता, शासन और चुनावी व्यवस्था ने उसे लोकतान्त्रिक ढंगसे अपनाया है । वहां का संघ राज्य टीका है,बिखरा नही । इससे उसे कोई खतरा नही हुआ। वहां के लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में कोई बिघाड नही हुआ। अमेरिका विकसित बनने में अनेक तत्व कारणीभूत है। इसमें वहां के सरकार ने अपनायी एक राष्ट्र एक चुनाव कि प्रक्रिया का भी अपना एक महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। माना कि भारत और अमेरिका में अनेक प्रकार कि भिन्नता है । लेकीन हमारे संविधान पर जिन जिन देशों का प्रभाव है उसमें अमेरिका यह भी एक देश है । भारत के सभी राजनीतिक दल, राजनेता,संसद और विधानसभा कि सामुहिक राजनीतिक इच्छाशक्ती एक राष्ट्र एक चुनाव पर सकारात्मक ढंग से एकत्रित होती है तो यह भारत में भी मुमकिन है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१) तुलनात्मक शासन आणि राजकारण : डॉ. वासंती रासम —डॉ.विजय देठे दृडायमंड पब्लीकेशन्स, पुणे २०१४.

२) https://hi.wikipedia.org/wiki/ संयुक्त राज्य संविधान.

३) http://www.mdudde.net/pdf/study_material_DDE/ma/ma_politicalscience/MA-F Comparative Politics and Political Analysis-complete.pdf.

४) https://www.arsdcollege.ac.in/wp-content/uploads/ राजनीतिक दल अर्थ प्रकृती व ऐतिहासिक विकास

५) कौल लोकमताचा भारतीय निवडणुकांची उकल —प्रणय रॉय,दोराब आर.सोपरीवाला —अनुवाद —सतीश कामत—मनोविकास प्रकाशन —२०१९

□□□

Principal
A.V.Education Society
Degloor College Degloor